PAGE NO. :
DATE : / /

नीतिशास्त्र का स्वरूप —

नीतिशास्त्र जिसे व्यवहार दर्शन, नीतिदर्शन, नीतिविज्ञान और आचार शास्त्र भी कहते हैं, दर्शन की एक शाखा है। यद्यपि आचारशास्त्र की परिभाषा तथा क्षेत्र प्रत्येक युग में मतभेद के विषय रहे हैं, फिर भी व्यापक रूप से कहा जा सकता है कि आचारशास्त्र में उन सामान्य सिद्धांतों का विवेचन होता है जिनके आधार पर मानवीय क्रियाओं और उद्देश्यों का मूल्यांकन संभव हो सके। अधिकतर लेखक और विचारक इस बात से भी सहमत हैं कि आचार-शास्त्र का संबंध मुख्यतः मानदंडों और मूल्यों से है, न कि वस्तुस्थितियों के अध्ययन या खोज से और इन मानदंडों का प्रयोग न केवल व्यक्तिगत जीवन के विश्लेषण में किया जाना चाहिए वरन् सामाजिक जीवन के विश्लेषण में भी। नीतिशास्त्र मानव को सही निर्णय लेने की क्षमता विकसित करता है।

अच्छा-बुरा, सही और गलत, गुण और दोष, न्याय और जुर्म जैसी अवधारणाओं को परिभाषित करके, नीतिशास्त्र मानवीय नैतिकता के प्रश्नों को सुलझाने का प्रयास करता

है। बौद्धिक क्षमता के क्षेत्र के रूप में, वह नैतिक दर्शन, वर्णात्मक नीतिशास्त्र, और मूल्य सिद्धांत के क्षेत्रों से भी संबंधित है।

नीतिशास्त्र में अध्यास के तीन प्रमुख क्षेत्र जिन्हे मान्यता प्राप्त है :—

1. अधिनीतिशास्त्र, जिसका संबंध नैतिक प्रथा-पनाओं के सैद्धांतिक अर्थ और संदर्भ से है, और कैसे उनके सत्य मूल्य (यदि कोई हो तो) निर्धारित किये जा सकते हैं।

2. मानदण्डक नीतिशास्त्र, जिसका संबंध किसी नैतिक कार्यपथ के निर्धारण के व्यावहारिक तरीको से है।

3. अनुप्रयुक्त नीतिशास्त्र, जिसका सम्बन्ध इस बात से है कि किसी विशिष्ट स्थिति या क्रिया के किसी अनुक्षेत्र में किसी व्यक्ति को क्या करना चाहिए (या उसे क्या करने की अनुमति है)।